आओ किताबों से दोस्ती करें

फोटो– पुरुषोत्तम

– प्रतिभा सिंह

कोविड के बाद स्कूल खुलने पर बच्चों के सीखने को लेकर काफी चुनौतियां देखने में आ रही हैं। ऐसे में कहानियों और कविताओं के जरिये उन्हें उनकी भूली हुई दक्षताओं से जोड़ने का तरीका काफी कारगर लग रहा है। बच्चे के जीवन में बाल साहित्य की काफी महत्वपूर्ण जगह है। मां की लोरियां, दादी, नानी की कहानियां बच्चे के जीवन का पहला बाल साहित्य है। स्कूल आने से पहले बच्चे कहानी किस्से सुनने व गढ़ने में माहिर होते हैं।

शुरुआती कक्षा में बच्चा जब आता है तो यह कहा जाता है कि वह अपनी कक्षा की किताब पढ़ ले। 5 साल का बच्चा जब हमारे पास आता है उसके पास चार–पांच हजार शब्दों का भंडार होता है। वह देखने, सुनने, जानने व सीखने की दिशा में आगे बढ़ता है। वह कहानियां सुनने के साथ–साथ प्रश्न भी करने लगता है। जो बाल साहित्य बच्चों में मनोरंजन के साथ–साथ पठन–पाठन का संस्कार विकसित करता है, जो उनकी रुचि के अनुकूल होता है जिससे वह अपने मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त कर पाते हैं जिससे बच्चों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न होती है, उनकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति होती है वही बाल साहित्य है।

बाल साहित्य का चुनाव करते समय हमें बच्चे की आयु को ध्यान में रखना होगा। शुरुआती कक्षा में बच्चों के लिए छोटी–छोटी कविताएं, कहानियां शामिल की जानी चाहिए। मौखिक वाचन के रूप में अधिक कहानियां, कविताएं शामिल की जाएं, इसमें अध्यापक की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए। शिक्षक को प्रतिदिन बच्चों को एक कहानी सुनानी चाहिए। कहानी मौखिक सुनाएं और फिर बताएं कि यह किस किताब से ली गई है। इससे बच्चे भी कहानी पढ़ने का प्रयास करते हैं। इससे बच्चे की कल्पना को विस्तार मिलता है। वे नए–नए शब्दों से परिचित होते हैं। भाषा के निकट आते हैं।

जबसे हमारे विद्यालय में बच्चों को स्वतंत्र पठन के अवसर मिले तब से उनकी पढ़ने के प्रति ललक बढ़ी ऐसा अनुभव किया। कक्षा में अनेक अवसर ऐसे आए कि बच्चा किताब पढ़ना नहीं जानता, कहानियों की किताबों के नाम जानता है। चित्र देखकर बच्चे कहते हैं कि हम खिचड़ी वाली कहानी पढ़ेंगे। कभी आम का मौसम, कभी धानी के थे तीन दोस्त, जंगल में खुशबू आदि अपनी पसंद की

कहानी सुनाने के लिए उत्सुक रहते हैं। जो बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं रखते थे वे भी किताबों को उलट–पलट कर देखते हैं। उनमें कहानी पढ़ने और सुनाने की रुचि बढ़ी है। हम कक्षा शिक्षण के समय बच्चों को प्रतिदिन बाल साहित्य की किताबें पढ़ने का अवसर देते हैं। इससे निश्चित रूप से बच्चों में पठन कौशल का विकास हुआ है। बच्चे अक्षरों को पहचान कर पढ़ने की कोशिश करते हैं। इस समय भी बच्चे किताब पढ़ने के लिए ले जाते हैं और आकर उसे सुनाते हैं।

बाल साहित्य की कहानियां बच्चों में आनंद व उत्साह उत्पन्न करती हैं। उनके ज्ञान को विस्तार देती हैं। उनमें समझ विकसित करती हैं। पाठ्य पुस्तक के पाठों को समझने में बाल साहित्य की कहानियां बहुत मददगार साबित हुई हैं। हमारी पाठय पुस्तकों में कई कहानियां ऐसी हैं जिन्हें बाल साहित्य की पुस्तकों में बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है जिसे पढ़ने में बच्चे आनंद का अनुभव करते हैं। उनकी समझ विकसित होती है। अनुमान लगाने के भरपूर अवसर मिलते हैं। पेड़–पौधे, जानवर, त्योहार, मौसम, बादल, वर्षा, रिश्ते आदि से संबंधित कहानियां व कविता हमारी पाठ्य पुस्तकों में भी हैं और उन्हीं को बाल साहित्य में बड़े मनोरंजक तरीके से चित्रांकन करके प्रस्तुत किया गया है।

बाल साहित्य की कहानियां एक विषय से दूसरे विषय को जोड़ने में मदद करती हैं। झूला, आम की टोकरी, पतंग, रसोईघर, भालू ने खेली फुटबॉल, चांद वाली अम्मा, पापा जब बच्चे थे, सूरज और चांद, मन करता है, उलझन, सबसे अच्छा पेड़, पत्तियों का चिड़ियाघर ऐसे बहुत से पाठ हमारी पाठय पुस्तकों में हैं। अनोखा रिश्ता, चूहा और बिल्ली,जंगल में खुशबू, आम का मौसम, धानी के थे तीन दोस्त, खिचड़ी, दादा जी का छाता, मटका, पीला रंग, सबसे मीठा आम आदि कहानियां पाठ्य पुस्तकों के पाठों से जोड़ती हैं। उन्हें समझने में मदद करती हैं। यह सब कहानियां बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई हैं। इन्हें पढ़ने और सुनने में अपनापन महसूस होता है। बाल साहित्य की कहानियां संवेदनशील, सामाजिक, व्यावहारिक बनाती हैं। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, रिश्ते, आस–पड़ोस की जानकारी देतीं, समझ विकसित करती व संवेदना जगाती हैं। मानवीय मूल्य विकसित करती हैं।

कहानी पर बच्चों से बातचीत

मैंने अपनी कक्षा में छोटे पौधे, बड़े पौधे कहानी सुनाई तो उससे संबंधित बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार से हैं। मैंने बच्चों से पूछा कि अच्छा बताओ आप क्या खाना पसंद करते हो तो सभी बच्चों ने अपनी अपनी पसंद से उत्तर दिया। मैंने पूछा कि आपके घर में खाना कौन बनाता है तो किसी ने बताया मम्मी बनाती है, किसी ने कहा दादी। मैंने पूछा कि अच्छा बताओ तुम्हारे घर में दाल सब्जी, अनाज, फल ये सब कहां से आते हैं? तो सभी के उत्तर अलग थे किसी ने कहा कि उसके खेत से आते हैं। किसी ने कहा कि वह बाजार से खरीद कर लाते हैं। फिर मैंने पूछा अच्छा बताओ किसके घर में जानवर हैं? तो कुछ बच्चों ने जानवरों के नाम भी बताए। पूछने पर कि जानवर क्या–क्या खाते हैं तो बच्चे क्योंकि उसी परिवेश से जुड़े हुए हैं उन्होंने बताया कि बच्चे घास पत्ती चारा आदि खाते हैं। यह सब कहां से आता है तो सबने कहा कि हमें खेत से, पेड़ पौधों से मिलता है। फिर पूछा अच्छा बच्चों बढ़ने के लिए हमें किसकी जरूरत होती है? तो बच्चों ने बताया कि हमें भोजन की जरूरत होती है। फिर पूछा क्या पेड़–पौधे किसी ने बढ़ते देखे हैं तो कुछ बच्चों ने बताया कि हां, उन्होंने पेड़–पौधों को बढ़ते हुए देखा है। आम, अमरूद के पेड़ को बढ़ते देखा। मैंने बताया कि हमें बढ़ने के लिए भोजन की जरूरत पड़ती है। तो पेड़ पौधों को भी भोजन की जरूरत पड़ती है तो पेड़ पौधे क्या खाते होंगे तो कुछ बच्चों ने हवा और पानी बताया। सभी ने अनुमान लगाकर अपनी समझ से उत्तर दिए। कहानी सुनने में आनंद का अनुभव किया।

निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि बाल साहित्य बच्चों को स्थाई पाठक बनाने में मदद करता है। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने में मदद करता है और बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जागृत करता है। प्रश्न उत्तर इस तरह हों कि बच्चों की बातचीत को आगे बढ़ाएं, उन्हें अनुमान लगाने का अवसर दें और अपने अपने तरीके से अपनी बात कहने का अवसर दें। प्रश्न उत्तर के माध्यम से बातचीत को आगे बढ़ाकर बच्चों की झिझक को भी कम किया जा सकता है और उन्हें अपनी बात कहने का भरपूर अवसर दिया जा सकता है। उन्हें बढ़ावा देकर और अधिक अपने विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बाल साहित्य की पुस्तकों में इन सब की अपार संभावनाएं भरी हुई हैं। जरूरत है कि हम उन्हें अधिक से अधिक बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय महुआ खेड़ा गंज, काशीपुर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका के पद पर हैं।)